॥ कृष्णाञ्जलिस्तोत्रप्रारम्भः ॥

1

भगानिस्तोत्रं०

श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ नमः सरस्वत्यै॥ अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्व
विनोदिनि नन्दिनते गिरिवरविन्ध्यशिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासि
नि जिष्णुनुते भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बि विभूतिक
ते जय जय हे महिषासुरमर्द्दिनि रम्यकपर्द्दिनि शैलसुते॥१॥ सुरवर
वर्षिणि दुर्द्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते त्रिभुवनपोषिणि शं
॥१॥ करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि ॥२॥
दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते जय जय हे महिषासुरमर्द्दिनि रम्यकप
र्द्दिनि शैलसुते॥२॥ अयि जगदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि वासिनि हा
सरते शिखरि शिरोमणि तुंगहिमालय शृंगनिजालय मध्यगते

जदम्बर

अध्याश्रीलिनोत्रं०

शैलसुते॥५॥ धनुरनुसंगरणक्षणसंगपरिस्फुरदंगनटत्कटके कनकपि
शंगप्रषत्कनिषंगरसम्भटशृंगहतावटुके॥ कृतचतुरंगवलक्षितिरंग
घटद्बहुरंगरटद्बटुके जयजयहे महिषासुरमर्द्दिनिरम्यकपर्द्दिनिशै
लसुते॥६॥ अयिरणदुर्मदशत्रुवधोद्धरदुर्द्धरनिर्भरशक्तिभृते
2 चतुरविचारधुरीणमहाशिवदूतकृतः प्रमथाधिपते॥ दुरितं
॥२॥ दुरीहदुराशयदुर्मतिदानवदूतकृतान्तगते जयजयहे महिषासुर ॥२॥
मर्द्दिनिरम्यकपर्द्दिनिशैलसुते॥७॥ अयिशरणागतवैरिव
धूवरवीरवराभयदायकरे त्रिभुवनमस्तकशूलविरोधिशि
रोधिकृतामलशूलकरे॥ दुमदुमितामरदुन्दुभिनादमहोमुखरीकृत

मदमधुरे मधुकैटभभंजिनि महिषविभंजिनि रासरते जयजय हे महि
षासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥३॥ अयि निज [illegible]कृ[illegible]तिमात्र
निराकृति धूम्रविलोचनि धूम्रशते समरविशोषितशोणितबीज
समुद्भवशोणितबीजलते ॥ शिवशिवशुंभनिशुंभमहाहवत
र्पित भूतपिशाचपते जयजय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकप
र्दिनि शैलसुते ॥४॥ अयि शतखंड विखंडितरुंड वितुंडित
शुंडगजाधिपते रिपुगजगंड विदारणचंडपराक्रमशौंड
मृगाधिपते ॥ निजभुजदंडनिपातितचंडविपातितमुंडभ
टाधिपते जयजय हे [illegible] महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि

दुर्गाञ्जलिस्तोत्रम्

3

शैलसुते ॥१०॥ अयि सुमनस्सुमनस्सुमनस्सुमनस्सुमनोरमकान्तियु
ते ॥ श्रितरजनीरजनीरजनीरजनीकरवक्त्रभृते ॥ सुनयनविभ्रम
र भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि
रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥११॥ महितमहाहवमल्लमतल्लिकवल्लित
रल्लिकभिल्लरते ॥ विरचितवल्लिकपल्लिकमल्लिकझिल्लिक ॥३॥
॥३॥ भिल्लिकवर्गवृते ॥ श्रुतकृतफुल्लसमुल्लसितारुणतल्लजपल्ल
श्लो३ वसल्ललिते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैल
सुते ॥१२॥ अविरलगण्डगलन्मदमेदुरमत्तमतङ्गजरा
जपते ॥ त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधिरूपपयोनिधिराज

रनित कृते जयजयहेमहिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥८॥सु
रललनानततथेयितथेयि नत्तथेयि ॥ नत्तथो भिनयोत्तर नृत्यरते कृत कुकु
थः कुकुथोंगतडादिकताललकुतूहलगानरते धुधुकुट धुकुट धिं
धिमित ध्वनि धीरमृदंग निनादरते जयजयहेमहिषासुरमर्दिनि
रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ९ ॥ जयजय जप्य जये जय शब्द परस्तु
ति तत्पर विश्वनुते ॥ झिंझिमि झिंझिमि झिंझिमि झंकृत नूपुर शिं
जितमोहित भूतपते ॥ नटित नटार्ध नटी नट नायक नाटक ना
टित नाट्य रते जयजयहे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि
६

दुर्गा अयिगिरि स्तोत्रम्

मनोहरगुंजितरंजितशैलनिकुंजगते ॥ निजगणभूतमहाशब
रीगणरंगिणसंभृतकेलितते ॥ जय जय हे महिषासुरमर्दिनि
रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१६॥ कटितटपीतदुकूलविचित्रमयूखतिरस्कृत
4 चन्द्ररुचे ॥ प्रणतसुरासुरमौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
॥ जितकनकाचलमौलिपदोर्जितनिर्भरकुंजरकुंभकुचे ॥
॥८॥ जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१७॥ ॥८॥
विजितसहस्रकरैकसहस्रकरैकनुते ॥ कृतसुरतारकसंगरतारक
संगरतारकसूनुसुतेनुते ॥ सुरतसमाधिसमाधिसमानसमाधि
समानसमाधिजपरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि

सुते जयजयहे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥
॥१३॥ अयि सुदतीजनलालसमानसमोहनमन्मथराजसुते जय
जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१४॥ कमल
दलामलकोमलकान्तिकलाकलितामलभालतले । सकल
विलासकलानिलयक्रमकेलिचलत्कलहंसकुले । अलिकुल
संकुलकुन्तलमण्डलमौलिमिलद्बकुलालिकुले जयजयहे
महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१५॥ करमुरली
रववीजितकूजितलज्जितकोकिलमञ्जुमते ॥ मिलितमिलि

सनाज्ञम्।

रसौविमुखीक्रियते ।।ममनुमतं शिवमानधने भवती कृपया कि
मुनः क्रियते ।।जयजयहे महिषासुरमर्द्दिनि रम्यकपर्द्दिनि शैल
सुते ।।२१।। अयि मयि दीनतया कृपयैव त्वया भवितव्य सदैव
।।५।। मुमे ।।अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथानुमितासि रमे
मनुचितमत्र भवानि कृताकुरुतादुरुतापमपाकुरुते ।।जयज ।।५।।
यहे महिषासुरमर्द्दिनि रम्यकपर्द्दिनि शैलसुते ।।२२।। स्तुतिमि
तेः स्तुमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत् ।।प
रमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्
इति श्रीशंकराचार्यविरचितं पुष्पांजलिः स्तवः समाप्तः ।। ।।

विशेलसुते ॥१९॥ परकमसंकनुरगानिलये ॥ वीविसनिपोनुदिनं सुधिवे ॥ श्रीपिकमले कमलानिलये कमलानिलय: सकथं नभवे त ॥ तवपद्मेवपदंपरमं प्रमिष ॥ नि ॥ शीलपतोममकिं नधिकेजप जेयहे ॥ महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१९॥ कनका मलमलकलंकी कला भानुषिन्वतिनि रांरमवं भजतिस किं नेशचीकुचकुंभतटीपरिरंभ सुखानुभवम् ॥ तवचरणं शरणं करवाणिनतामरवीणि निवानिशिवं जयजयहे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२०॥ तवविमलेन्दु कलं विमलेन्दु कलंकलयन्ननुकूलयते किमुपुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ